systhema 2/2007 · 21. Jahrgang · Seite 239-240

Weinheim geht Hindi

Das Weinheimer Modell findet auch auf anderen Kontinenten Interesse und Beachtung. Für eine systemische Ausbildung in Indien wurde das Sonderheft 1 der *systhema* zu dem Film von A. v. Schlippe, H. Molter und N. Böhmer (1994): Zugänge zu familiären Wirklichkeiten (Video-Cooperative-Ruhr) ins Englische und daraus in Hindi übersetzt.[1] Hier eine Kostprobe daraus:

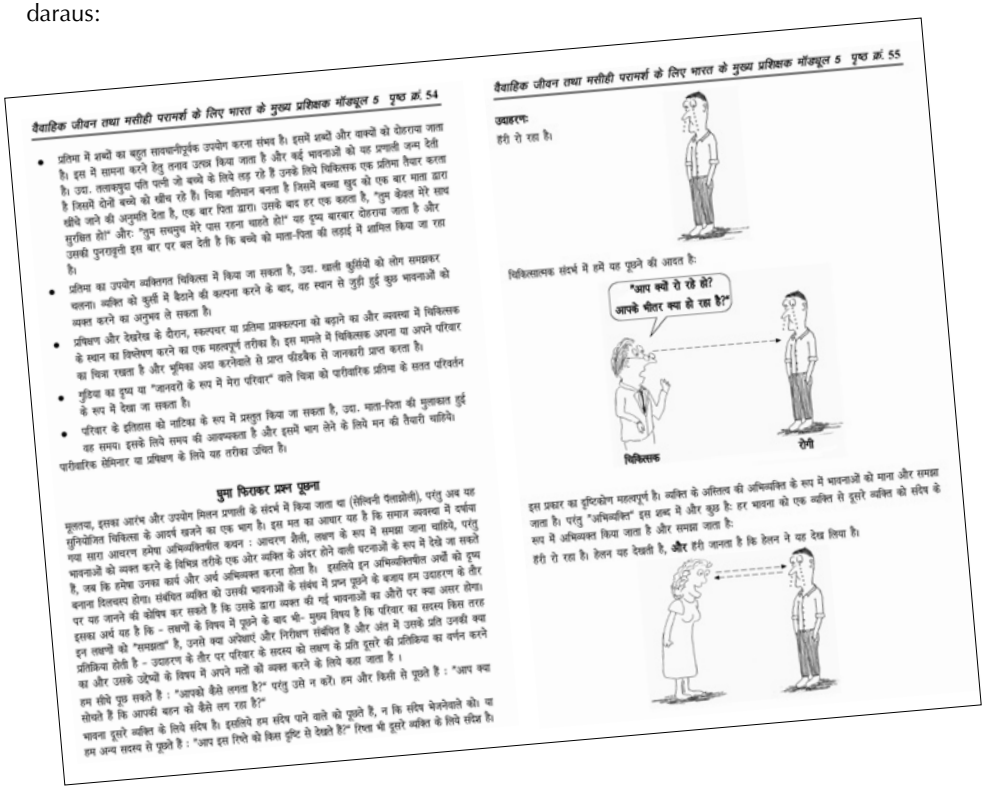

वैवाहिक जीवन तथा मसीही परामर्श के लिए भारत के मुख्य प्रशिक्षक मॉड्यूल 5 पृष्ठ क्रं. 54

- प्रतिमा में शब्दों का बहुत सावधानीपूर्वक उपयोग करना संभव है। इसमें शब्दों और वाक्यों को दोहराया जाता है। इस में सामना करने हेतु तनाव उत्पन्न किया जाता है और कई भावनाओं को यह प्रणाली जन्म देती है। उदा. तलाकशुदा पति पत्नी जो बच्चे के लिये लड़ रहे हैं उनके लिये चिकित्सक एक प्रतिमा तैयार करता है जिसमें दोनों बच्चे को खींच रहे हैं। चित्र गतिमान बनता है जिसमें बच्चा खुद को एक बार माता द्वारा खींचे जाने की अनुमति देता है, एक बार पिता द्वारा। उसके बाद हर एक कहता है, "तुम केवल मेरे साथ सुरक्षित हो!" और: "तुम सचमुच मेरे पास रहना चाहते हो!" यह दृश्य बारबार दोहराया जाता है और उसकी पुनरावृत्ती इस बार पर बल देती है कि बच्चे को माता-पिता की लड़ाई में शामिल किया जा रहा है।
- प्रतिमा का उपयोग व्यक्तिगत चिकित्सा में किया जा सकता है, उदा. खाली कुर्सियों को लोग समझकर चलना। व्यक्ति को कुर्सी में बैठाने की कल्पना करने के बाद, वह स्थान से जुड़ी हुई कुछ भावनाओं को व्यक्त करने का अनुभव ले सकता है।
- प्रशिक्षण और देखरेख के दौरान, स्कल्पचर या प्रतिमा प्राक्कल्पना को बढ़ाने का और व्यवस्था में चिकित्सक के स्थान का विश्लेषण करने का एक महत्वपूर्ण तरीका है। इस मामले में चिकित्सक अपना या अपने परिवार का चित्र रखता है और भूमिका अदा करनेवाले से प्राप्त फीडबैक से जानकारी प्राप्त करता है।
- गुडिया का दृश्य या "जानवरों के रूप में मेरा परिवार" वाले चित्र को पारीवारिक प्रतिमा के सतत परिवर्तन के रूप में देखा जा सकता है।
- परिवार के इतिहास को नाटिका के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है, उदा. माता-पिता की मुलाकात हुई वह समय। इसके लिये समय की आवश्यकता है और इसमें भाग लेने के लिये मन की तैयारी चाहिये।

पारीवारिक सेमिनार या प्रशिक्षण के लिये यह तरीका उचित है।

घुमा फिराकर प्रश्न पूछना

मूलतया, इसका आरंभ और उपयोग मिलन प्रणाली के संदर्भ में किया जाता था (सेल्विनी पेलाझोली), परंतु अब यह सुनियोजित चिकित्सा के आदर्श खजने का एक भाग है। इस मत का आधार यह है कि समाज व्यवस्था में दर्शाया गया सारा आचरण हमेशा अभिव्यक्तिशील कथन : आचरण शैली, लक्षण के रूप में समझा जाना चाहिये, परंतु भावनाओं को व्यक्त करने के विभिन्न तरीके एक ओर व्यक्ति के अंदर होने वाली घटनाओं के रूप में देखे जा सकते है, जब कि हमेशा उनका कार्य और अर्थ अभिव्यक्त करना होता है। इसलिये इन अभिव्यक्तिशील अर्थों को दृश्य बनाना दिलचस्प होगा। संबंधित व्यक्ति को उसकी भावनाओं के संबंध में प्रश्न पूछने के बजाय हम उदाहरण के तौर पर यह जानने की कोशिश कर सकते हैं कि उसके द्वारा व्यक्त की गई भावनाओं का औरों पर क्या असर होगा। इसका अर्थ यह है कि - लक्षणों के विषय में पूछने के बाद भी- मुख्य विषय है कि परिवार का सदस्य किस तरह इन लक्षणों को "समझता" है, उनसे क्या अपेक्षाएं और निरीक्षण संबंधित हैं और अंत में उसके प्रति उनकी क्या प्रतिक्रिया होती है - उदाहरण के तौर पर परिवार के सदस्य को लक्षण के प्रति दूसरे की प्रतिक्रिया का वर्णन करने का और उसके उद्देश्यों के विषय में अपने मतों को व्यक्त करने के लिये कहा जाता है। हम सीधे पूछ सकते हैं : "आपको कैसे लगता है?" परंतु उसे न करें। हम और किसी से पूछते हैं : "आप क्या सोचते हैं कि आपकी बहन को कैसे लग रहा है?" भावना दूसरे व्यक्ति के लिये संदेश है। इसलिये हम संदेश पाने वाले को पूछते हैं, न कि संदेश भेजनेवाले को। या हम अन्य सदस्य से पूछते हैं : "आप इस रिश्ते को किस दृष्टि से देखते हैं?" रिश्ता भी दूसरे व्यक्ति के लिये संदेश है।

वैवाहिक जीवन तथा मसीही परामर्श के लिए भारत के मुख्य प्रशिक्षक मॉड्यूल 5 पृष्ठ क्रं. 55

उदाहरण:
हरी रो रहा है।

चिकित्सात्मक संदर्भ में हमें यह पूछने की आदत है:

इस प्रकार का दृष्टिकोण महत्वपूर्ण है। व्यक्ति के अस्तित्व की अभिव्यक्ति के रूप में भावनाओं को माना और समझा जाता है। परंतु "अभिव्यक्ति" इस शब्द में और कुछ है: हर भावना को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को संदेश के रूप में अभिव्यक्त किया जाता है और समझा जाता है:

हरी रो रहा है। हेलन यह देखती है, **और** हरी जानता है कि हेलन ने यह देख लिया है।

1) Der Film (+ Sonderheft) kann bei der Video-Cooperative-Ruhr, Kielstraße 10, 44145 Dortmund, Tel.: 0231 / 81 50 70, E-Mail: info@vcr.de auch als DVD bestellt werden.

3.2 Circular questioning

Circular questioning was originally developed and applied in the context of the Milan approach (Selvini Palazzoli et al. 1981) but now belongs to the standard repertoire of systemic therapy (v. Schlippe and Kriz 1993). The basis of this view is that all behaviour displayed in a social system can always (among other things) be understood as a communicative proposition: particular behavioural patterns, symptoms – but also various ways of expressing emotions – can be seen, on the one hand, as events happening in the person, whereas they always also have a communicative function and meaning. So it can be interesting to make these communicative meanings visible. Instead of intensively interrogating the person in question about his feelings, one can, for instance, investigate the **effect** on others of the feelings he expresses. It follows that – even when asking about symptoms – the central issue is how each family member "understands" these symptoms, what expectations and observations are associated with them and finally how they react to them – e.g. a family member is asked to describe another's reaction to the symptom and to express his conjectures about his motives.

«One could ask directly: "How do you feel?" But we do not do that. We ask someone else: "How do you think your sister is feeling?"

A feeling is a message to another person. And so we ask the one who receives the message, not the one who sends it. Or in a relationship we ask another member: "How do you see this relationship?" Since a relationship is also a message to another person.» (Cecchin, remark in v. Schlippe, Kriz 1987 p. 39).

An example

Harry is crying:

In a therapeutic context we are in the habit of asking:

Therapist **Client**

Such a perspective is important. Feelings can be recognised and appreciated as an expression of the existence of a person. But there is even more in the word "expression": every feeling is expressed and can be understood as a message from Somebody to Somebody else:

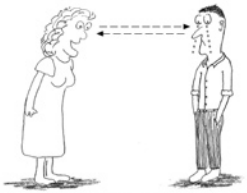

Harry is crying. Helen notices this, **and** Harry knows that Helen has noticed this.

3.2. Das zirkuläre Fragen

Das zirkuläre Fragen wurde zunächst im Rahmen des Mailänder Ansatzes entwickelt und verwendet (Selvini Palazzoli et al. 1981), inzwischen gehört es zum Standardrepertoire systemischer Therapie (v. Schlippe u. Kriz 1993). Dieser Technik liegt eine Sichtweise zugrunde, nach der alles gezeigte Verhalten in einem sozialen System immer (auch) als kommunikatives Angebot verstanden werden kann: Bestimmte Verhaltensweisen, Symptome, aber auch die unterschiedlichen Formen von Gefühlsausdruck können zum einen als im Menschen ablaufende Ereignisse angesehen werden, darüber hinaus haben sie jedoch immer auch kommunikative Funktion und Bedeutung. Daher kann es interessant sein, diese kommunikativen Bedeutungen sichtbar zu machen. Statt den betreffenden Menschen ausführlich nach seinen eigenen Empfindungen zu befragen, kann man z.B. die **Wirkung** eines mitgeteilten Gefühls auf die anderen untersuchen. Konsequenterweise steht daher auch bei den Fragen bezüglich der Symptome der Aspekt im Zentrum, wie jedes Familienmitglied diese Symptome „versteht", welche Erwartungen und Beobachtungen damit verbunden sind und wie letztlich darauf reagiert wird - z.B. wird ein Familienmitglied gebeten, die Reaktion eines anderen auf das Symptom zu beschreiben und seine Vermutungen über dessen Motive zu äußern.

> *„Man kann direkt fragen...: ‚Wie fühlst du dich?' Wir tun das nicht..., wir fragen jemand anderen: ‚Was denkst du, wie deine Schwester sich fühlt?' Ein Gefühl ist eine Botschaft an einen anderen. Und so fragen wir den, der die Botschaft empfängt, nicht den, der sie sendet. Und auch bei einer Beziehung ... fragen wir einen anderen: ‚Wie siehst du diese Beziehung?' weil auch eine Beziehung eine Botschaft an einen anderen ist." (Cecchin, Diskussionsbeitrag in: v. Schlippe, Kriz 1987, S. 39; übers. durch uns).*

Ein Beispiel

Helmut weint:

Im therapeutischen Kontext sind wir gewohnt, so zu fragen:

Therapeut Klient